आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 4 अंक : 4 दिसम्बर, 2016 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

परिकल्पना एवं निर्देशन : कुलपति प्रो. (डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत

कुलपति सन्देश

पशुधन कल्याण के लिए सभी माध्यमों का उपयोग हमारी प्राथमिकता है

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाईयों और बहनों!

ई–सुशासन और सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए गांव–ढ़ाणी तक वेटरनरी विश्वविद्यालय अपनी पहुंच बनाने के लिए संकल्पबद्ध है। इसी के तहत माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह ने 16 नवम्बर, 2016 को राजभवन जयपुर में वेटरनरी विश्वविद्यालय की महत्वकांक्षी टोल–फ्री हैल्पलाईन सेवा का शुभारम्भ करके एक नया अध्याय जोड़ दिया है। हैल्पलाईन दूरभाष नम्बर **1800–180–6224** चौबीसों घंटे विद्यार्थियों, प्रदेश के पशुपालकों और आमजन के लिए खुले रहेंगे। वे किसी भी समय इसका उपयोग करके विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों, शिक्षकों अथवा अधिकारियों से बातचीत करके अपनी जिज्ञासा तथा शंकाओं का समाधान प्राप्त कर सकेंगें। देश–विदेश में रहने वाले लोगों को भी इस सेवा का लाभ मिल सकेगा। ऐसी हैल्पलाईन शुरू करने वाला राजुवास राज्य का पहला विश्वविद्यालय बन गया है। इससे पूर्व भी कृषक और पशुपालकों की खिदमत में राजुवास द्वारा एस.एम.एस. सलाहकारी सेवाएं भी प्रारम्भ की गई हैं। जरूरत के मुताबिक एस.एम.एस. और क्षेत्रवार पशु रोगों के पूर्वानुमान की सूचना एक सॉफ्टवेयर में कृषकों के विवरण और मोबाइल नम्बर पर उपलब्ध करवाई जाती है। इसके लिए राज्य के दूरदराज में बैठे पशुपालकों तक सूचना पहुंचाने के लिए किसान और पशुपालकों के पंजीयन का कार्य निरंतर किया जा रहा है। इसी कड़ी में दूरस्थ क्षेत्रों तक पशुचिकित्सा शिक्षा, पशुपालन की नवीन तकनीकों और सम–सामयिक विषयों पर विशेषज्ञ वार्ताओं का रेडियो प्रसारण भी किया जा रहा है। 10 जनवरी 2013 को आकाशवाणी के बीकानेर केन्द्र से ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम का साप्ताहिक प्रसारण शुरू किया गया। किसान और पशुपालक समुदाय की मांग और उपयोगिता के मद्देनजर 14 मई 2014 को राज्य के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक गुरूवार की सांयः 5:30 बजे से इसका प्रसारण किया जा रहा है। हमारा प्रयास है कि हर संभव सभी माध्यमों का उपयोग करके पशुपालन की बेहत्तरी के काम को गति मिल सके। कृषक और पशुपालकों के साथ–साथ वेट्स, पैरा वेट्स भी पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान से सम्बन्धित सूचना और मार्गदर्शन प्राप्त कर रहे हैं। सभी के मिले–जुले प्रयासों से ही ''पशुधन कल्याण – सर्व जन हितार्थ'' का सपना सच होगा।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कल्याण सिंह द्वारा जयपुर में राजुवास की टोल-फ्री हैल्पलाईन सेवा का शुभारम्भ

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम), जयपुर में राजुवास की प्रस्तुति

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा राज्य सरकार द्वारा जयपुर में आयोजित ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट में (ग्राम–2016) तीनों ही दिन 9 से 11 नवम्बर 2016 तक उन्नत पशुओं का सजीव प्रदर्शन, स्मॉर्ट फॉर्म, जाजम चौपाल और प्रदर्शनी स्टॉल में पशुपालन और पशुचिकित्सा की विभिन्न तकनीकों को हजारों की तादाद में पहुँचे कृषकों और पशुपालकों ने देखा और सराहा। राजुवास के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने ग्राम के दौरान डेयरी और पशुपालन से सतत् आजीविका विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेंस में संभागियों को सम्बोधित किया। राजुवास ने "पशुपालन, पशुचिकित्सा एवं डेयरी" विषय पर आयोजित जाजम चौपाल के आयोजन का जिम्मा भी संभाला।

ग्राम कॉन्फ्रेन्स में राजुवास के शिक्षक, छात्र–छात्राओं की सहभागिता

ग्राम–2016 में तीन दिनों तक कृषि एवं पशुपालन पर कॉन्फ्रेन्स का आयोजन किया गया। पहले दिन 9 नवम्बर, 2016 को आयोजित कॉन्फ्रेन्स में वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर से पहुँचे शिक्षक व छात्र–छात्राओं ने शिरकत की। 10 नवम्बर को दूसरे दिन की कॉन्फ्रेन्स में विश्वविद्यालय के संघटक वेटरनरी महाविद्यालय वल्लभनगर, नवानियां (उदयपुर) के शिक्षक और छात्र–छात्राओं ने पहुँचकर अपनी भागीदारी की। 11 नवम्बर को आयोजित कॉन्फ्रेन्स में स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान जयपुर के छात्र–छात्राओं और शिक्षकों ने बड़ी संख्या में शामिल होकर इसका लाभ उठाया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने 10 नवम्बर, 2016 को ग्राम–2016 में "पशुपालन के माध्यम से डेयरी और स्थाई आजीविका" विषय पर आयोजित कॉन्फ्रेन्स को सम्बोधित किया। केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री श्री राज्यवर्द्धन सिंह राडौड़ के मुख्य आतिथ्य में आयोजित कॉन्फ्रेन्स में राज्य के पशुपालन सचिव श्री के.एल. मीणा ने भी संबोधित किया। इस पैनल परिचर्चा में जी सी एम एम एफ (सी) के प्रबंध निदेशक श्री आर.एस. सोढ़ी, आस्ट्रेलिया की एनीमल एण्ड लेबोरेट्रीज साईसेज की प्राथमिक उद्योगों की निदेशक एन. बेकेम, एन.डी.आर.आई., नई दिल्ली डेयरी इन्जीनियरिंग के प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. ए.के. सिंह और केवेंटर के प्रबंध निदेशक श्री एम.के. जालान ने भी भाग लिया।

स्मार्ट फॉर्म में राजुवास की चार तकनीकों का प्रदर्शन

स्मार्ट फार्म टेक्नोलॉजी के अंतर्गत राजुवास की चार उन्नत तकनीकों को दर्शाया गया। हाइड्रोपोनिक्स पद्धति से हरा चारा उत्पादन की नई तकनीक का प्रदर्शन किया। बिना जमीन के हाइड्रोपोनिक्स तकनीक द्वारा उत्पादित जौ व मक्का का हरा चारा, गेहूँ घास, धान, सेवण व गन्ने की नर्सरी का सजीव प्रदर्शन किसानों के लिए प्रमुख आकर्षण का केन्द्र रहे। पशुओं के लिए पौष्टिक पशु आहार "अजोला" (जल की सतह पर तैरने वाली जलीय फर्न) का उत्पादन करने की विधि में कृषकों ने गहरी रूचि दिखाई। अजोला की पंखुड़ियों में नील–हरित शैवाल (एनाबिना एजोली) सहजीवी के रूप में पाई जाती है जो वायुमण्डल की नाईट्रोजन का उपयोग कर अजोला में प्रोटीन व विटामिन की वृद्धि करते हैं। इससे पशुओं को अधिक पौष्टिक आहार मिलता है। तीसरी तकनीक के रूप में हरे चारे को साईलेज के रूप में संरक्षित करने की साईलो बैग तकनीक को भी किसानों ने मौके पर देखा। इसमें हरा चारा छः माह से एक वर्ष तक सुरक्षित रहता है। पहले इसे बड़े आकार के गढ्डे या पिट् में बनाया जाता था मगर अब एक, पांच व दस क्विंटल के आकार के साईलो बेग में बनाने से पशुपालकों को सुविधा हो गई। पशुपालकों ने यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक तकनीक को सराहा तथा इसे घर पर तैयार करने की जानकारी प्राप्त की। यह ब्लाक पशुओं के लिए सम्पूरक आहार का कार्य करता हैं ताकि कुपोषण या अकाल के दौरान उनकी प्रोटीन व ऊर्जा की आवश्यकता को पूरा किया जा सके।

राजुवास प्रकाशनों का विमोचन

ग्राम के दौरान कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने राजुवास के "पशुपालन नए आयाम" एग्रीटेक विशेषांक का तथा गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने "पशुओं के लिए पौष्टिक पशु आहार अजोला पुस्तिका का विमोचन किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, प्रसार शिक्षा निदेशक डॉ. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक अनुसंधान प्रो. राकेश राव एवं लाईजन ऑफिसर डॉ. धर्म सिंह मीणा भी उपस्थित रहे।

"पशुपालन, पशुचिकित्सा एवं डेयरी" की जाजम चौपाल में पशुपालकों का लगा जमघट

ग्राम में तीनों ही दिन राजुवास द्वारा "पशुपालन, पशुचिकित्सा एवं डेयरी" विषय पर आयोजित जाजम चौपाल में किसानों व पशुपालकों का जमघट लगा रहा। राजुवास, पशुपालन विभाग, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर, राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर, केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के संयुक्त तत्वावधान में इस जाजम चौपाल का आयोजन किया गया। गाय, भैंस, भेड, बकरी और ऊंटों के लालन–पालन, स्वास्थ्य, आहार, प्रजनन और उत्पादन बढ़ाने के लिए विषय विशेषज्ञों की वार्ताओं के बाद कृषक और पशुपालकों की समस्याओं का निराकरण भी किया गया। पशुपालन के क्षेत्र में भामाशाह पशु बीमा योजना, ऊंट पालन योजना के साथ–साथ पशुपालन विभाग द्वारा चलाई जा रही राज्य सरकार को विभिन्न योजनाओं की जानकारी इस चौपाल के माध्यम से किसानों तक पहुँचाई गई। पशुचिकित्सा विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों और कृषकों के मध्य संवाद के दौरान अलग–अलग दिवसों में गृहमंत्री श्री गुलाब चंद कटारिया, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़, जल संसाधन मंत्री डॉ. रामप्रताप, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री अरूण चतुर्वेदी, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी एवं भू–जल मंत्री किरण माहेश्वरी और सहकारिता राज्यमंत्री श्री अजय सिंह ने पूरे समय जाजम में उपस्थित रहकर पशुपालकों की समस्याओं को सुना और उनकी शंकाओं का निराकरण किया।

उन्नत पशु नस्लों का प्रदर्शन

राजुवास द्वारा अनुसंधान केन्द्रों पर पाले जा रहे उन्नत किस्म के पशुओं का प्रदर्शन किया। इसमें देशी थारपारकर नस्ल की चौबीस लीटर प्रतिदिन दूध उत्पादन वाली गाय और उन्नत सांड का भी प्रदर्शन किया गया। दक्षिणी राजस्थान के देशी गौवंश "मालवी" के नर और मादा पशुओं को प्रदर्शित किया गया। मुर्गीपालन के क्षेत्र में टर्की और बतख की उपयोगिता के मद्देनजर राजुवास ने टर्की और बतख की खाकी कैम्बेल व व्हाइट पेकिन नस्लों को भी प्रदर्शित किया। ये दोनों ही मुर्गीपालन के विकल्प के रूप में अधिक अंडे और मांस उत्पादन देने वाली है। कृषक और पशुपालकों ने कौतूहल के साथ इनके पालन के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की। राजुवास ब्रॉयलर का प्रदर्शन भी ग्राम का आकर्षण रहा।

राजुवास प्रदर्शनी में स्वदेशी गौवंश को दिया प्रोत्साहन

राजुवास की प्रदर्शनी में 3–डी मॉडल के माध्यम से स्वदेशी गौवंश को प्रदेश में बढावा देने के लिए कृषकों को प्रेरित किया गया। राज्य की 6 स्वदेशी नस्लों में राठी, थारपारकर, कांकरेज, साहीवाल, गिर और मालवी के आकर्षक मॉडल रख कर उनकी विशेषताओं की जानकारी दी गई। इस प्रदर्शनी को कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी, गौपालन मंत्री श्री ओटाराम देवासी, श्रम राज्य मंत्री श्री सुरेन्द्र पाल सिंह टीटी सहित हजारों की संख्या में कृषकों व पशुपालकों ने अवलोकन कर जानकारी ली। पशुपालन की लघुफिल्म प्रदर्शन, पशुओं के उन्नत आहार प्रबंधन, नस्ल संवर्द्धन, पशु स्वास्थ्य और उनका रख–रखाव, स्वदेशी गौवंशों की उपयोगिता और पालन के विषयों पर रंगीन मॉडल, फ्लेक्स और आकर्षक चित्रों का प्रदर्शन कर उपयोगी जानकारी दी। प्रदर्शनी स्टॉल में आने वाले सभी पशुपालकों, कृषकों को मुद्रित पशुपालन का साहित्य भी प्रदान किया।

राज्यपाल द्वारा राजुवास की टोल–फ्री हैल्पलाईन सेवा का शुभारम्भ

राज्यपाल श्रीकल्याण सिंह ने 16 नवम्बर को वेटरनरी विश्वविद्यालय की महत्वाकांक्षी टोल–फ्री हैल्पलाईन सेवा का शुभारम्भ किया। माननीय राज्यपाल ने राजभवन से कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत से टोल–फ्री हैल्पलाईन नम्बर 1800–180–6224 पर वार्ता पर इसकी शुरूआत की। माननीय राज्यपाल ने इसे वेटरनरी विश्वविद्यालय की एक बहुत अच्छी शुरूआत बताकर कुलपति, राजुवास को बधाई दी एवं इसे विद्यार्थियों, प्रदेश के पशुपालकों व आमजन के लिए लाभकारी बताया। कुलपति प्रो. गहलोत ने बताया कि चौबीस घण्टे इस टोल–फ्री नम्बर पर कृषक, पशुपालक और विद्यार्थी किसी भी समय पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों, शिक्षकों अथवा अधिकारियों से बातचीत कर अपनी जिज्ञासा तथा शंकाओं का समाधान प्राप्त कर सकेंगे। कुलपति प्रो. गहलोत ने बताया कि कृषकों और पशुपालकों द्वारा की गई कॉल के आधार पर उनकी समस्याओं के बारे में संबंधित चिकित्सा विशेषज्ञ से सीधी वार्ता करवाकर समाधान किया जायेगा।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् से मिली राजुवास को पांच वर्षों के लिए मान्यता

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रत्यायन (मान्यता) बोर्ड ने राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय को अगले पांच वर्ष के लिए अपनी मान्यता (अधिस्वीकरण) प्रदान की है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत के नेतृत्व में प्रस्तुत की गई, स्व–अध्ययन रिपोर्ट के बाद आई.सी.ए.आर. की चार सदस्यीय पीयर रिव्यू टीम तथा सेक्टोरल कमेटी की आंकलन रिपोर्ट के आधार पर वर्ष 2016–17 से 2020–21 तक के लिए राजुवास को मान्यता प्रदान की गई है। राजुवास के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत के अथक प्रयासों और कार्यों की बदौलत प्राप्त अधिस्वीकरण से वेटरनरी विश्वविद्यालय में शैक्षणिक और अनुसंधान कार्यों में ओर तेजी लाई जा सकेगी।

श्वानों में भी होगी फैको पद्धति से शल्य क्रिया

वेटरनरी कॉलेज के सर्जरी एवं रेडियोलॉजी विभाग में एआईएनपी ऑन डिमिस्का एवं पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग के संयुक्त तत्वावधान में श्वानों हेतु निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन 15 से 19 नवम्बर 2016 तक किया गया। शिविर में कुल 55 श्वानों का पंजीकरण किया गया। विभागाध्यक्ष डॉ. प्रवीण विश्नोई व नेत्र रोग प्रभारी डॉ. एस.के. झीरवाल ने बताया कि विभिन्न नेत्र जांचों के दौरान पांच श्वानों में मोतियाबिन्द पाया गया एवं इन श्वानों की फैको पद्धति से शल्य चिकित्सा द्वारा लैन्स प्रत्यारोपण करवाने की सलाह दी गई।

जैव विविधता संरक्षण पर पशुपालक प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा नागौर एवं श्री डूँगरगढ़ के सुदूर गाँव के 45 पशुपालकों का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर वेटरनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रोफेसर जी.एस. मनोहर ने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण–पत्र प्रदान किए। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक प्रो. सुभाष चन्द्र गोस्वामी ने बताया कि शिविर में डॉ. सत्यवीर सिंह, डॉ. अरूण कुमार झीरवाल, डॉ. मोहन लाल चौधरी, डॉ. तारा बोथरा, डॉ. रजनी अरोड़ा और डॉ. अशोक खीचड़ ने जैव विविधता, गौवंश, मुर्गीपालन, पशुपालन और पशुचिकित्सा के अन्य विषयों की जानकारी दी।

पशुपालकों ने जानी चारा प्रबंधन की तकनीकें

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र द्वारा विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिये गए गांव डाईया में उन्नत पशुपोषण पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर 28 नवम्बर को आयोजित किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि डॉ. दिनेश जैन, डॉ. नीरज शर्मा, दिनेश आचार्य एवं महेन्द्र सिंह मनोहर ने अपनी सेवाएं दी। इस शिविर में 30 महिला एवं पुरूष पशुपालकों ने भाग लिया।

कौशल व उद्यमिता विकास से रोजगार के शत–प्रतिशत अवसर हैं उपलब्ध : कुलपति प्रो. गहलोत

वेटरनरी विश्वविद्यालय और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में 19 नवम्बर, 2016 को "एग्रीवीजन" पर एक दिवसीय सेमीनार आयोजित की गई। "कृषि और पशुचिकित्सा शिक्षा उद्यमिता के लिए" विषय पर सेमीनार में वेटरनरी और कृषि विश्वविद्यालय में अध्यनरत छात्र–छात्राओं और शिक्षकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कृषि और पशुचिकित्सा के क्षेत्र में उद्यमिता और स्वरोजगार की विपुल संभावनाएं मौजूद हैं अतः शिक्षित युवाओं को काम की तलाश के बजाए अपना उद्यम शुरू कर अन्य लोगों को भी रोजगार देने की ओर प्रवृत होना चाहिए। ये विचार सेमीनार में शामिल अतिथि वक्ताओं ने व्यक्त किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एस.के. आर.ए.यू. के कुलपति प्रो. बी.आर. छींपा, विशिष्ट अतिथि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री संजय पाचपोर व महापौर नगर निगम नारायण चौपड़ा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने की। अतिथियों ने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे छात्र जीवन के सुनहरे काल में अपने अध्यापक की सहायता से शैक्षणिक श्रेष्ठता के साथ व्यावसायिकता कुशलता पर ध्यान देंगे तो ही एक उज्ज्वल भविष्य की नींव रखी जा सकती है। वेटरनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. जी.एस. मनोहर, केन्द्रीय छात्र संघ के अध्यक्ष लोकेन्द्र सिंह शेखावत, प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया, कुलसचिव प्रो. राकेश राव, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. एस.सी. गोस्वामी भी मंचासीन थे। तकनीकी सत्र में महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के डॉ. लोकेश गुप्ता, एस.के.आर.ए.यू. के डॉ. सत्यवीर मीणा, वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रो. राजेश कुमार धूड़िया व डॉ. अशोक खींचड़ ने कृषि व पशुचिकित्सा में उद्यमिता के अवसर विषय पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किये।

वीयूटीआरसी चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 17, 18, 19, 22, 24 एवं 25 नवम्बर को गांव शीतसर, लाछड़सर, भाणुदा, ददरेवा, बुचावास एवं लाखलान गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 186 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 8, 18, 21, 26, 28, 30 नवम्बर को गांव दईदासपुरा, 10–सरकारी, उड़सर, 1 केएसआर, मालसर एं जैतसर गांवो में तथा 23–24 नवम्बर को केन्द्र परिसर में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 204 पशुपालकों ने भाग लिया।

सिरोही में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8, 16, 18 एवं 25 नवम्बर को गांव डोडुआ, उथमन, वीरवाड़ा एवं अणगौर गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 78 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 7, 8, 9, 10, 15, 17 एवं 21 नवम्बर को गांव रोझा, सन्डास, झारड़िया, मनु, चन्द्रावती, हुडास, गोराउ, एवं दुजार एवं 18 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 217 पशुपालकों ने भाग लिया।

अजमेर में पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 15, 17, 18 एवं 19 नवम्बर को गांव रामालिया, सीतापुरी, नयागांव तथा सुहावा गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 133 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 8, 14, 17, 19, 22 एवं 25 नवम्बर को गांव नीजपुर, करटा, मूथ, करलिया, रामगढ़ एवं गोल गांवों में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 68 महिलों सहित कुल 139 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 4, 9, 11, 16, 18, 23, 24, एवं 25 नवम्बर को गांव नगला मैथंना, अमोली, बरसौ, पसोपा, गहनकर, चेकोश, सोनोखर, भगोरी गांवो में तथा दिनांक 7 एवं 29 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 272 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 16, 18 एवं 22 नवम्बर ए को गांव हरभगतपुरा, चुली एवं रामनिवासपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 119 पशुपालकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 8, 15, 16, 18, 19, 21 एवं 26 नवम्बर को गांव पालकिया, जामपुरा, बम्बोरी, लुआवद, चावण्डहेडी, रंगपुर गंगाईचा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 225 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 24, 25 एवं 29 नवम्बर को गांव घांतरी, मूरलिया एवं घाटी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 77 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

धौलपुर में 579 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 8, 9, 11, 17, 24, 26, 28 एवं 30 नवम्बर को गांव कुरेन्डा, इलोली, गडायच, झीलपुरा–दरियापुर, बीछपुरी, खुण्डेला का पुरा, मालोनी, जागीरपुरा गांवों में तथा दिनांक 16 नवम्बर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में 488 महिलों सहित कुल 579 पशुपालकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी एवं प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 5, 16, 19, 21, 24 एव 26 नवम्बर को गांव मलवानी, दीपलाना, बिरलाली, असरजाना परलिका एवं रामगढ़ गांवों तथा 9–11 नवम्बर कृषि विज्ञान केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 201 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

नवजात पशुओं को खीस अवश्य पिलाएं

प्रायः यह देखा गया है कि पशुपालक नवजात पशुओं को खीस (मां का पहला दूध) पिलाने के बारे में ज्यादा रूचि नहीं लेते हैं और यदि वो नवजातों को खीस पिलाते भी हैं तो इसमें लापरवाही बरतते हैं। इस वजह से नवजात को खीस का पूरा फायदा नहीं मिल पाता है। शायद ऐसा पशुपालकों की खीस के बारे में अनभिज्ञता के कारण है। अतः यहां आवश्यक हो जाता है कि पशुपालकों को खीस पिलाने के महत्व के बारे में पूर्ण जानकारी हो।

मां का पहला दूध जो पर्याप्त गाढ़ा, पीला और चिकना होता है, ''खीस'' कहलाता है। खीस प्रोटीन से भरपूर होता है, साथ ही इसमें रोगों से लड़ने की क्षमता रखने वाली प्रोटीन्स (एंटीबॉडीज) भी होती हैं। ये एंटीबॉडीज नवजात को इस उम्र में होने वाली कई प्रकार की बीमारियों और संक्रमण से बचाती है। इसके अतिरिक्त खीस में पर्याप्त विटामिन और लवण होते हैं जो नवजात की शारीरिक बढ़ोतरी और अच्छे स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। कई बार नवजात को खीस पिलाने से दस्त हो जाते हैं जिससे पशुपालक यह मान लेता है कि खीस पिलाने से जहर हो जाता है। इस कारण पशुपालक भविष्य में नवजात को खीस पिलाने से डरता है और वह इस भ्रम में खीस को फेंक देता है जबकि यह बात सही नहीं है। नवजात आवश्यकता से अधिक खीस पी लेता है जिसको वह पचा नहीं पाता है और उसे दस्त लग जाते हैं। ज्यादा दस्त के कारण शरीर में पानी की कमी (निर्जलीकरण) हो जाती है जिससे नवजात की मृत्यु भी हो जाती है। अतः पशुपालक को चाहिए कि खीस को नियंत्रित मात्रा में ही पिलाया जाये और दिन में कई बार पिलाया जाये। जन्म के तुरन्त बाद से ही नवजात को खीस पिलानी शुरू करनी चाहिए क्योंकि जन्म के पहले 24 घटें में नवजात की आंत से खीस का समुचित अवशोषण होने से वह नवजात के निए ज्यादा लाभकारी रहती है। कई बार पशुपालक पशु से एक साथ खीस निकाल लेते हैं और समय–समय पर बोतल से नवजात को पिलाते रहते हैं। इस प्रकार खीस पिलाने से नवजात को खीस के साथ संक्रमण का खतरा रहता है। अतः नवजात को सीधा मां के थनों से ही दूध अथवा खीस पीने देना चाहिए। इससे मां के शरीर में संवेदन प्रक्रिया के माध्यम से थनों में दूध भी अच्छी तरह से उतरता है तथा दूध बनने की प्रक्रिया भी नियमित होती है।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुधन अनुसंधान केन्द्र : डग (झालावाड़)

पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग की स्थापना वर्ष 2015 में की गई। केन्द्र की स्थापना हेतु राज्य सरकार के आदेशानुसार पशुपालन विभाग द्वारा 268.41 बीघा जमीन 4 अगस्त, 2015 को वेटरनरी विश्वविद्यालय को हस्तांतरित की गई। इस केन्द्र का प्रशासनिक नियंत्रण अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, नवानियां (उदयपुर) के अधीन है। इस केन्द्र की स्थापना मालवी गौवंश प्रजनन फार्म की स्थापना एवं द्वि–वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा आरम्भ करवाने हेतु की गई। 17 नवम्बर, 2015 से द्वि–वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम आरम्भ किया गया है। इसके लिए कक्षा कक्ष के लिए फर्नीचर खरीद कर तीन शिक्षकों की नियुक्ति संविदा पर की गई है। वर्तमान में उक्त पाठ्यक्रम में 23 छात्र–छात्राएं अध्ययन्नरत हैं जिनका प्रथम सेमेस्टर पूरा हो चुका है एवं द्वितीय सेमेस्टर चल रहा है। प्रयोगशाला, कम्पयुटर एवं पुस्तकालय सेवाएं भी उपलब्ध करवाई गई है। केन्द्र पर निगरानी हेतु 16 सीसी टीवी कैमरे लगाएं गये है। वर्तमान में केन्द्र के छात्रों के लिए खेलकूद का वालीबाल मैदान तैयार करवा दिया गया है। भवन की मरम्मत एवं बाउन्ड्री निर्माण का कार्य प्रगति पर है। वर्तमान में द्विवर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम के 2016–17 सत्र में प्रवेश प्रक्रिया जारी है। मालवी गौवंश प्रजनन कार्य का कार्य भी तेजी से चल रहा है इस बाबत केन्द्र पर चारा उत्पादन किया जा रहा है। सिंचाई हेतु 10 एच.पी और 7.5 एच.पी की मोटर और 650 मीटर लम्बी नई पाईप लाईन डाली गई है। मालवी नस्ल की 102 गौवंश फार्म पर मौजूद हैं जिनसे दूध उत्पादन आरम्भ हो चुका है। पशुशाला निर्माण, बछड़ो एवं बछड़ियों के शैड़, काल्विंग शैड़, चारा स्टोर, रोड एवं लाईट तथा पुरानी बिल्डिगों की मरम्मत के कार्य के लिए टेंडर कार्य हो चुके है। वर्तमान में फार्म पर हरा चारा उत्पादन हेतु 3 हेक्टेयर में रिजका व बरसीम की बुवाई की जा चुकी है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–दिसम्बर, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	पाली, सिरोही, कोटा, सीकर, टौंक, चूरू, बीकानेर, बारां
मुंह–खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	धौलपुर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, अलवर, बारां, बूंदी, हनुमानगढ़, जालोर, नागौर, राजसमन्द, सीकर, टोंक, कोटा, चित्तौड़गढ़, चूरू, बीकानेर, बारां
गलघोंटू	भैंस, गाय	जयपुर, भीलवाड़ा, अलवर, दौसा, धौलपुर, सीकर, चित्तौड़गढ़, टौंक
चेचक/छोटी माता	ऊँट, भेड़, बकरी	बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, हनुमानगढ़, गंगानगर, पाली
लंगड़ा रोग	गाय	चित्तौड़गढ़
फेसियोलोसिस	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, सीकर, बून्दी
न्यूमोनिक पाश्चुरेल्लोसिस संक्रमण	गाय, बकरी, भेड़	अजमेर, चित्तौडगढ़, उदयपुर, बीकानेर
अश्वों में इन्फ्लुएंजा रोग	घोड़ा	अजमेर, भीलवाड़ा, जोधपुर, नागौर, सीकर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. जी.एस. मनोहर, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

अपने स्वदेशी भेड़ वंश को पहचानें
मारवाड़ी भेड़ : गौरव प्रदेश का

मारवाड़ी भेड़ का नाम इसके उद्‌गम क्षेत्र मारवाड़ से पड़ा है। यह जोधपुर, जालौर, नागौर, पाली, बाडमेर जिलों में मुख्यतया पाई जाती है साथ ही अजमेर, उदयपुर और गुजरात क्षेत्र में भी देखी जा सकती है। मारवाड़ी भेड़ को मुख्यतया ऊन तथा मांस के लिए पाला जाता है। यह मध्यम आकार की भेड़ है जिसका मुँह काले रंग का होता है जो कि गर्दन के निचले हिस्से तक फैला है। वयस्क नर का भार लगभग 30–32 किलो तथा मादा का शारीरिक भार लगभग 26–27 किलो होता है। इनके कान छोटे तथा नलीदार होते हैं। नर व मादा दोनों सींग रहित होते हैं। इनकी पूंछ छोटी तथा पतली होती है। मारवाड़ी भेड़ बहुत मजबूत, शुष्क जलवायु के लिए अनुकूलनीय है। ये चरने के लिए बहुत दूर तक चल लेती है। एक–डेढ साल की आयु में प्रजनन लायक हो जाती है। एक बार में एक ही मैमने को जन्म देती है। इनसे प्राप्त ऊन सफेद रंग की होती है लेकिन ज्यादा घनी नहीं होती है। इनसे प्राप्त ऊन कारपेट प्रकार की होती है। एक कतरन में लगभग 800–900 ग्राम ऊन प्राप्त होती है। एक वर्ष में लगभग 2 किलो ऊन प्राप्त हो जाती है।

सफलता की कहानी
कॉर्पोरेट कैरियर छोड़, किया पशुपालन व्यवसाय

भारत ग्राम प्रधान देश है। लोगों को जो सुकून गांवों में मिलता है उसे शायद ही दुनिया के किसी कोने में यह नसीब हो। यही वजह है कि भूपेन्द्रसिंह पुत्र श्री दयाराम भाम्भू जैसे युवा प्रोफेशनल कॉर्पोरेट जिंदगी से ऊबकर गांवों में जिन्दगी की खुशियां तलाशने आते हैं। प्रोफेशनल कैरियर के बाद भी डेयरी व्यवसाय में सफल उद्यमी के रूप में पहचान बनाने वाले भूपेन्द्र सिंह एक बिरले व्यक्ति है। दूध उत्पादन की मांग लगातार बढ़ने से इस क्षेत्र में व्यवसाय के नए–नए रास्ते खुल रहे हैं। भूपेन्द्र ने महालक्ष्मी डेयरी, पूना से डेयरी व्यवसाय को जाना फिर अपने पैतृक गांव पीपेरन आकर अपने माता–पिता से बात की। पिता एक किसान होने के कारण इतना खर्च वहन नहीं कर सकते थे, उन्होंने अपने नजदीकी पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र (वी.यू.टी.आर.सी.) सूरतगढ़ में संपर्क किया जहां उनको अपने क्षेत्र की दुधारू नस्लों और सफल डेयरी व्यवसाय के बारे में जानकारी मिली और उनसे प्रोत्साहित होकर अपने क्षेत्र की गौ नस्लों को अपनाया और बहुत ही कम खर्च पर अपना व्यवसाय शुरू कर दिया। भूपेन्द्र सिंह के पास 35 बीघा जमीन होते हुए भी उन्होंने चारे उत्पादन की नई तकनीक को अपनाया और सफलता की एक नई मिसाल बनकर सामने आये। वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ़ द्वारा दिये गये नवीन तकनीक से हरे चारे (अजोला) एवं साइलेज तकनीक को अपनाया। समय–समय पर टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवा की उपयोगिता को पहचाना। उन्होंने इस केन्द्र से खनिज लवण किस प्रकार दुग्ध उत्पादन में सहायक होते हैं का प्रशिक्षण प्राप्त कर पशुओं में खनिज लवण की कमी से होने वाले विकारों को समझकर अपने सभी पशुओं को खनिज लवण खिलाना शुरू किया। भूपेन्द्रसिंह अपने डेयरी व्यवसाय को चलाने के लिए आसपास के क्षेत्र से अच्छी नस्ल की गायें खरीद लाये। आज उनके पास कुल 28 गायें व 13 बछिया है। जिनमें 15 दूध देने वाली हैं तथा शेष शुष्क काल में है। इनकी डेयरी से प्रतिदिन 170 लीटर दूध का उत्पादन हो रहा है। जिसको वे 30 रू. प्रति लीटर की दर से बाजार में बेचकर आय प्राप्त कर रहे है। पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ के मार्ग–दर्शन से पीपरेन गांव निवासी भूपेन्द्र डेयरी व्यवसाय में एक नई मिसाल बनकर उभरे हैं।

(सम्पर्क: भूपेन्द्रसिंह, गांव पीपेरन, मो. 9950397713)

निदेशक की कलम से...

सर्दी के अनुकूल आवास और आहार का प्रबंधन करें

प्रिय किसान, पशुपालक भाईयों!

सर्दी के मौसम में पशु–पक्षियों के आवास और आहार व्यवस्था के लिए सर्तकता की जरूरत रहती है। गाय, बकरी, भेड़ में न्युमोनिक पाश्चुरेल्लोसिस संक्रमण, घोड़ों में इन्फ्लुएंजा और मुर्गियों में इन्फेक्शियस ब्रोंकाइटिस जैसी बीमारियों का अंदेशा रहता है। ऐसे में पशुओं को सर्दी से बचाव के लिए आरामदायक आवास व्यवस्था तथा खान–पान का उचित संयोजन किया जाना चाहिए। गलत तरीके से बनाए गए आवास में उत्पादन लागत बढ़ने के बावजूद भी दूध उत्पादन कम हो जाता है। पशु आवास ऊंची व समतल जगह पर बनाना चाहिए जिससे कि वर्षा के पानी व मल–मूत्र की निकासी की व्यवस्था आसानी से हो सके और पशु शाला सूखी रहे तथा पशुओं का स्वास्थ्य ठीक बना रहे। हवा व रोशनी की उत्तम व्यवस्था के साथ ही ठंडी हवाओं से बचाव के लिए उचित प्रबंधन किया जाना चाहिए। दूसरे सभी प्रकार के पशुओं के लिए उनकी उत्पादन क्षमता और शारीरिक स्थिति को बनाए रखने के लिए सर्दियों में पोषण पर भी ध्यान देना आवश्यक है। सर्दी में पशु अपने आप को गर्म करने के लिए 15–20 प्रतिशत अतिरिक्त ऊर्जा का उपयोग करते हैं। तापमान में गिरावट पशुओं में अधिक पोषण ग्रहण करने का कारण बनती हैं। सूखे चारे के साथ हरा चारा व दाना–बांटा पशु की उत्पादन क्षमता के अनुसार दिया जाना चाहिए। उसकी खुराक में अधिक ऊर्जा वाले खाद्य पदार्थो जैसे गुड़, तेल आदि मिलाना चाहिए। इससे पशु का शरीर गर्म रहता है। इसके लिए उबली हुई बाजरी, गुड़, तेल, जौ का दलिया व चापड़ भी काम में लिए जा सकते हैं। सर्दियों में खिलाए जाने वाले मुख्य हरे चारे से रिजका, बरसीम और सरसों प्रमुख हैं तथा सूखे चारे में बाजरे की कड़बी, मूंगफली का गुना, मोठ–मूंग चारा, शामिल है। अतः पशुपालक भाईयों को पशुओं के आरामदायक आवास तथा संतुलित आहार का उचित प्रबंधन कर लेना चाहिए। **–प्रो. आर.के. धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **दिसम्बर, 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.स	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	**प्रो. आर.के. तंवर** **9414136821** पशु औषधि विभाग, सीवीएएस, बीकानेर	गाय व भैंसों में विटामिन की कमी से होने वाली बीमारियां व उसका बचाव	01.12.2016
2	**प्रो. जे.एस. मेहता** **9414141823** निदेशक क्लिनिक्स, राजुवास, बीकानेर	पशुपालन में कृत्रिम गर्भाधानः एक अद्वितीय लाभकारी तकनीक	08.12.2016
3	**डॉ. वीरेन्द्र कुमार** **9784834172** पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोड़मदेसर	डेयरी व्यवसाय को अधिकतम लाभप्रद कैसे बनाएं	15.12.2016
4	**प्रो. टी.के. गहलोत** **9414137029** पशुशल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग, सीवीएएस	पशुओं में दुर्घटना ग्रस्त होने पर प्राथमिक शल्य चिकित्सा एवं सावधानियां	22.12.2016
5	**प्रो. ए.के. कटारिया** **9460073909** प्रभारी अधिकारी अपेक्स सेन्टर, राजुवास	सर्दियों में पशुओं में होने वाले संक्रामक रोगो की पहचान व रोकथाम	29.12.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने है।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया